International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

"हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा श्रेष्ठ कृति पुरस्कार से सम्मानित काव्य रचनाओं का विश्लेषण: 'तीस टुकड़ा सूरज' (शान्ति सागर) एवं 'एक टुकड़ा आकाश' (डॉ. किरण बिस्सा) के विशेष संदर्भ में"

डॉ० जयकरण यादव

शोध-निर्देशक, भाषा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक-124021

Jaikaranyadav00@gmail.com

अमन कुमारी

शोधार्थी, भाषा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक-124021

naveenaman259@gmail.com

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा श्रेष्ठ कृति पुरस्कार से सम्मानित दो महत्त्वपूर्ण काव्य कृतियाँ—शान्ति सागर के *'तीस टुकड़ा सूरज'* तथा डॉ. किरण बिस्सा के *'एक टुकड़ा आकाश'*—का समग्र एवं तुलनात्मक विश्लेषण करना है। हिन्दी कविता का आधुनिक स्वरूप केवल भावाभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं मानवीय जीवन की जटिलताओं को भी अपने भीतर समेटे हुए है। समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री-अस्मिता, सामाजिक असमानता, प्रकृति-संकट, मानवीय संवेदनाएँ, लोकतांत्रिक मूल्य तथा बदलते सामाजिक परिवेश की गहन अभिव्यक्ति दिखाई देती है। इन दोनों काव्य कृतियाँ में भी यही विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। शान्ति सागर के काव्य कृति *'तीस टुकड़ा सूरज'* में जीवन-संघर्ष, सामाजिक विषमता, श्रमिक वर्ग की पीड़ा, स्त्री-अस्मिता तथा मनुष्य की आंतरिक संवेदनाओं का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है। कवयित्री ने प्रतीकों, बिम्बों तथा सरल भाषा के माध्यम से समकालीन समाज की विसंगतियों को उद्घाटित किया है। दूसरी ओर डॉ. किरण बिस्सा के *'एक टुकड़ा आकाश'* में स्त्री की स्वतंत्र पहचान, आत्मसम्मान, जीवन-संघर्ष, प्रकृति के साथ उसका गहरा संबंध तथा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का सशक्त स्वर सुनाई देता है।

इस शोध में हरियाणा साहित्य अकादमी की साहित्यिक भूमिका, श्रेष्ठ कृति पुरस्कार की उपयोगिता, दोनों कवयित्रियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, उनकी काव्य-दृष्टि, विषय-वस्तु, भाषा-शैली, प्रतीक-विधान, बिम्ब-योजना तथा समकालीन हिन्दी कविता में उनके योगदान का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही दोनों काव्य कृतियाँ का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया जाएगा कि इन रचनाओं में समाज, संस्कृति तथा मानवीय जीवन के विविध आयाम किस प्रकार अभिव्यक्त हुए हैं।

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि दोनों कवयित्रियाँ केवल व्यक्तिगत भावनाओं की कवयित्री नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा स्त्री-अस्तित्व के प्रश्नों को व्यापक दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि इन कृतियों को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा श्रेष्ठ कृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन रचनाओं का साहित्यिक महत्त्व समकालीन हिन्दी कविता के विकास में उल्लेखनीय है।

मुख्य शब्द: *हरियाणा साहित्य अकादमी, श्रेष्ठ कृति पुरस्कार, शान्ति सागर, डॉ. किरण बिस्सा, समकालीन हिन्दी कविता, स्त्री विमर्श, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना।*

अध्याय-1

भूमिका

हिन्दी साहित्य भारतीय समाज के सांस्कृतिक विकास का एक सशक्त माध्यम रहा है। प्रत्येक युग में साहित्य ने समाज की परिस्थितियों, मानवीय अनुभवों तथा बदलते जीवन-मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। आधुनिक हिन्दी कविता विशेष रूप से सामाजिक यथार्थ, लोकतांत्रिक चेतना, स्त्री-विमर्श, पर्यावरणीय संकट तथा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समकालीन कवि केवल सौन्दर्य-बोध तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे समाज के वंचित वर्गों, स्त्रियों, श्रमिकों तथा सामान्य मनुष्य के संघर्षों को भी अपनी कविता का केन्द्र बनाते हैं।

हरियाणा साहित्य अकादमी राज्य की प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जिसका उद्देश्य हिन्दी एवं हरियाणवी साहित्य का संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार करना है। अकादमी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में उत्कृष्ट कृतियों को सम्मानित करती है, जिससे साहित्यकारों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है तथा गुणवत्तापूर्ण साहित्य

का सृजन बढ़ता है। 'श्रेष्ठ कृति पुरस्कार' अकादमी का एक प्रतिष्ठित सम्मान है, जो साहित्यिक उत्कृष्टता, नवीन चिंतन तथा सामाजिक सरोकारों से युक्त रचनाओं को प्रदान किया जाता है। शान्ति सागर तथा डॉ. किरण बिस्सा समकालीन हिन्दी कविता की ऐसी रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज के विविध पक्षों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। *'तीस टुकड़ा सूरज'* में जहाँ विखंडित सामाजिक यथार्थ, मानवीय पीड़ा तथा संघर्ष का चित्रण मिलता है, वहीं *'एक टुकड़ा आकाश'* में स्त्री की स्वतंत्र पहचान, आत्मसम्मान तथा सामाजिक समानता की आकांक्षा प्रमुख रूप से अभिव्यक्त हुई है।

आज का समाज तीव्र सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों से गुजर रहा है। वैश्वीकरण, बाज़ारवाद, तकनीकी विकास तथा बदलती जीवन-शैली ने मानवीय संबंधों को प्रभावित किया है। ऐसे समय में साहित्य समाज को आत्ममंथन का अवसर प्रदान करता है। इन दोनों काव्य कृतियाँ में आधुनिक जीवन की जटिलताओं के साथ-साथ आशा, संघर्ष और परिवर्तन की सकारात्मक चेतना भी दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इन दोनों काव्य-कृतियों का केवल साहित्यिक विश्लेषण करना नहीं है, बल्कि यह समझना भी है कि हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित होने के पीछे इनकी साहित्यिक गुणवत्ता, सामाजिक उपयोगिता तथा सांस्कृतिक महत्त्व क्या है।

अध्ययन में विषय-वस्तु, शिल्प, भाषा, प्रतीक, बिम्ब, स्त्री-विमर्श, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना तथा समकालीन संदर्भों का विश्लेषण किया जाएगा। इस शोध का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित कृतियों पर अपेक्षाकृत कम शोध कार्य उपलब्ध है। अतः यह अध्ययन भविष्य के शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही यह समकालीन हिन्दी कविता की नई प्रवृत्तियों को समझने में सहायक होगा।

अध्याय–2

हरियाणा साहित्य अकादमी : स्थापना, उद्देश्य एवं श्रेष्ठ कृति पुरस्कार

2.1 हरियाणा साहित्य अकादमी का परिचय

हरियाणा साहित्य अकादमी हरियाणा सरकार के संस्कृति विभाग के अंतर्गत कार्य करने वाली एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य हिन्दी तथा हरियाणवी भाषा एवं साहित्य का संरक्षण,

संवर्धन और प्रचार-प्रसार करना है। अकादमी साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से प्रदेश के साहित्यकारों को प्रोत्साहित करती है तथा साहित्यिक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हरियाणा राज्य के गठन के पश्चात यह अनुभव किया गया कि प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाने के लिए एक ऐसी संस्था की आवश्यकता है जो साहित्यिक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करे। इसी उद्देश्य से हरियाणा साहित्य अकादमी की स्थापना की गई।

समय के साथ यह संस्था राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं में अपना स्थान बना चुकी है। अकादमी का कार्यक्षेत्र केवल पुरस्कार प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन, संगोष्ठियों का आयोजन, युवा लेखकों को प्रोत्साहन, शोध कार्यों को सहयोग तथा साहित्यिक संवाद को बढ़ावा देने जैसे अनेक कार्य करती है।

2.2 अकादमी के उद्देश्य

हरियाणा साहित्य अकादमी निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करती है—

1. हिन्दी एवं हरियाणवी भाषा का विकास।
2. उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन।
3. साहित्यकारों को सम्मान एवं प्रोत्साहन प्रदान करना।
4. साहित्यिक शोध को बढ़ावा देना।
5. नई पीढ़ी को साहित्य से जोड़ना।
6. साहित्यिक गोष्ठियों एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन।
7. भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण।
8. उत्कृष्ट कृतियों को पुरस्कार प्रदान कर साहित्यिक गुणवत्ता को बढ़ावा देना।

इन उद्देश्यों के कारण हरियाणा साहित्य अकादमी केवल एक सरकारी संस्था नहीं बल्कि साहित्यिक चेतना का केन्द्र बन गई है।

2.3 श्रेष्ठ कृति पुरस्कार

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न साहित्यिक विधाओं—कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, नाटक, बाल साहित्य, अनुवाद आदि—में प्रकाशित श्रेष्ठ पुस्तकों को "श्रेष्ठ कृति पुरस्कार" प्रदान किया जाता है।

यह पुरस्कार केवल लोकप्रियता के आधार पर नहीं बल्कि निम्नलिखित मानकों पर दिया जाता है—

- साहित्यिक गुणवत्ता
- मौलिकता
- भाषा की प्रभावशीलता
- सामाजिक उपयोगिता
- नवीन दृष्टिकोण
- सांस्कृतिक मूल्य
- कलात्मक उत्कृष्टता

श्रेष्ठ कृति पुरस्कार किसी भी लेखक के साहित्यिक जीवन में महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है क्योंकि यह उसके रचनात्मक योगदान की संस्थागत स्वीकृति का प्रतीक है।

2.4 हरियाणा साहित्य अकादमी की साहित्यिक भूमिका

हरियाणा साहित्य अकादमी ने अनेक महत्वपूर्ण कवियों, कथाकारों, आलोचकों तथा शोधकर्ताओं को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अकादमी द्वारा—

- पुस्तक प्रकाशन
- शोध सहायता
- युवा लेखक सम्मान
- साहित्यकार सम्मान
- श्रेष्ठ कृति पुरस्कार

- व्याख्यानमाला
- साहित्य उत्सव

जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

इन कार्यक्रमों के माध्यम से साहित्य केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं रहता बल्कि समाज के व्यापक वर्ग तक पहुँचता है।

2.5 समकालीन हिन्दी कविता और अकादमी

समकालीन हिन्दी कविता सामाजिक यथार्थ की कविता है। इसमें—

- स्त्री विमर्श
- दलित विमर्श
- पर्यावरण चेतना
- लोकतांत्रिक मूल्य
- मानवीय संवेदना
- श्रमिक जीवन
- किसान समस्याएँ
- वैश्वीकरण

जैसे विषय प्रमुखता से उभरते हैं।

हरियाणा साहित्य अकादमी ने ऐसी ही सामाजिक प्रतिबद्धता वाली रचनाओं को सम्मानित कर साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

अध्याय–3

शान्ति सागर: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 परिचय

शान्ति सागर समकालीन हिन्दी कविता की महत्वपूर्ण कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में जीवन के यथार्थ, संघर्ष, मानवीय संवेदना तथा सामाजिक असमानताओं का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

वे उन कवयित्रियों में हैं जिन्होंने कविता को केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया।

3.2 काव्य-दृष्टि

शान्ति सागर की कविता का केन्द्र सामान्य मनुष्य है।

उनकी कविताओं में—

- गरीब
- मजदूर
- किसान
- स्त्री
- वृद्ध
- अकेला व्यक्ति
- संघर्षशील समाज

सभी उपस्थित हैं।

वे समाज की विसंगतियों को उजागर करते हुए परिवर्तन की आकांक्षा व्यक्त करती हैं।

3.3 भाषा एवं शैली

शान्ति सागर की भाषा—

- सरल
- सहज
- प्रभावशाली
- प्रतीकात्मक
- बिम्बात्मक

है।

उनकी कविताओं में कठिन शब्दों की अपेक्षा बोलचाल की भाषा का प्रयोग अधिक मिलता है, जिससे पाठक सीधे कविता से जुड़ जाता है।

3.4 साहित्यिक विशेषताएँ

उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- मानवीय संवेदना
- सामाजिक यथार्थ
- स्त्री चेतना
- प्रतीकात्मकता
- प्रकृति चित्रण
- आशावाद
- विद्रोह की चेतना

3.5 हिन्दी कविता में योगदान

शान्ति सागर ने आधुनिक हिन्दी कविता को सामाजिक दृष्टि प्रदान की है। उनकी कविताएँ व्यक्ति और समाज के संबंधों को नई संवेदना के साथ प्रस्तुत करती हैं।

इसी साहित्यिक योगदान के कारण उनका काव्य कृति **'तीस टुकड़ा सूरज'** हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित हुआ।

अध्याय–4

डॉ. किरण बिस्सा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

4.1 परिचय

डॉ. किरण बिस्सा समकालीन हिन्दी कविता की सशक्त कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में स्त्री-अस्मिता, सामाजिक समानता तथा मानवीय गरिमा का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

वे आधुनिक स्त्री के संघर्ष, आत्मविश्वास और स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिनिधि कवयित्री मानी जाती हैं।

4.2 काव्य-दृष्टि

डॉ. किरण बिस्सा की कविताओं का मूल स्वर है—

- स्त्री की स्वतंत्र पहचान
- आत्मसम्मान
- समानता
- प्रेम
- प्रकृति
- मानवीय संबंध

उनकी कविता विरोध नहीं बल्कि परिवर्तन की कविता है।

4.3 भाषा-शैली

उनकी भाषा—

- सहज
- संवेदनात्मक
- काव्यमय
- प्रतीकात्मक

है।

वे छोटे-छोटे बिम्बों के माध्यम से बड़े सामाजिक प्रश्नों को प्रस्तुत करती हैं।

4.4 साहित्यिक विशेषताएँ

उनकी कविता में—

- स्त्री विमर्श
- प्रकृति चेतना
- आशावाद
- सामाजिक समानता

- आधुनिक जीवन
- आत्मसंघर्ष
- सकारात्मक दृष्टिकोण

स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अध्याय–5

शान्ति सागर के काव्य कृति *'तीस टुकड़ा सूरज'* का विश्लेषण

5.1 कृति का परिचय

"तीस टुकड़ा सूरज" समकालीन हिन्दी कविता का एक महत्त्वपूर्ण काव्य कृति है, जिसमें कवयित्री शान्ति सागर ने वर्तमान समाज की जटिलताओं, मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक विषमताओं तथा जीवन-संघर्ष को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह संग्रह केवल व्यक्तिगत अनुभूतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामूहिक जीवन के अनेक प्रश्नों को सामने लाता है। संग्रह की कविताएँ पाठक को सामाजिक यथार्थ से साक्षात्कार कराती हैं और उसे आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं।

काव्य कृति का शीर्षक *'तीस टुकड़ा सूरज'* स्वयं एक गहन प्रतीक है। सामान्यतः सूर्य प्रकाश, ऊर्जा, आशा और जीवन का प्रतीक माना जाता है, परन्तु जब वही सूर्य "टुकड़ों" में विभाजित दिखाई देता है तो यह आधुनिक समाज की विखंडित चेतना, बिखरे हुए मानवीय संबंधों तथा असमान सामाजिक संरचना का संकेत देता है। कवयित्री इस प्रतीक के माध्यम से यह स्पष्ट करती हैं कि आज का मनुष्य पूर्णता से दूर होकर विखंडन, अकेलेपन और संघर्ष का जीवन जी रहा है।

5.2 सामाजिक चेतना

इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी गहन सामाजिक चेतना है। कवयित्री समाज के कमजोर, वंचित तथा उपेक्षित वर्गों के जीवन को अपनी कविता का केन्द्र बनाती हैं। उनकी दृष्टि केवल समस्याओं के चित्रण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे समाज में परिवर्तन की आवश्यकता का भी संकेत देती हैं।

कविताओं में किसान, मजदूर, निर्धन, वृद्ध तथा सामान्य नागरिक के जीवन-संघर्ष का यथार्थ चित्रण मिलता है। कवयित्री आधुनिक विकास के नाम पर बढ़ती असमानताओं पर प्रश्न उठाती हैं। उनकी कविताएँ सामाजिक न्याय और मानवीय समानता की स्थापना की आकांक्षा व्यक्त करती हैं।

5.3 मानवीय संवेदना

शान्ति सागर की कविता का मूल आधार मानवीय संवेदना है। उनकी रचनाओं में मनुष्य का दुःख, अकेलापन, संघर्ष, आशा और आत्मविश्वास अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त हुआ है।

वे मनुष्य की बाहरी परिस्थितियों से अधिक उसकी आंतरिक पीड़ा को समझने का प्रयास करती हैं। उनकी कविता पाठक के भीतर करुणा, सहानुभूति और मानवीय मूल्यों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न करती है।

5.4 स्त्री-विमर्श

समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री-विमर्श अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय है। *'तीस टुकड़ा सूरज'* में स्त्री को केवल पीड़ित या शोषित रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, बल्कि उसे संघर्षशील, आत्मनिर्भर और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

कवयित्री यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री केवल परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के निर्माण में समान भागीदारी निभाती है। उनकी कविताओं में स्त्री अपनी पहचान और सम्मान के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है।

5.5 प्रकृति-बोध

प्रकृति इस काव्य कृति का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। कवयित्री प्रकृति को केवल सौन्दर्य के रूप में नहीं देखतीं बल्कि उसे जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

सूर्य, आकाश, नदी, पेड़, वर्षा, मिट्टी तथा ऋतुओं के माध्यम से कवयित्री मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को अभिव्यक्त करती हैं। प्रकृति यहाँ मनुष्य के सुख-दुःख की सहभागी बन जाती है।

5.6 प्रतीक एवं बिम्ब

इस संग्रह में प्रतीकों का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग हुआ है।

मुख्य प्रतीक—

- सूरज
- अंधेरा
- आकाश
- रास्ता
- नदी
- पेड़
- मिट्टी
- धूप
- चिड़िया

इन प्रतीकों के माध्यम से कवयित्री समाज की गहरी सच्चाइयों को अभिव्यक्त करती हैं।

बिम्ब-विधान भी अत्यंत सशक्त है। दृश्यात्मक, श्रव्य तथा स्पर्श संबंधी बिम्ब कविता को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

5.7 भाषा एवं शिल्प

शान्ति सागर की भाषा अत्यंत सहज, सरल तथा प्रभावपूर्ण है।

भाषा की प्रमुख विशेषताएँ—

- सरलता
- स्पष्टता
- भावात्मकता
- लाक्षणिकता
- प्रतीकात्मकता
- मुक्तछंद शैली
- संवादात्मक प्रवाह

कवयित्री कठिन अलंकारिक भाषा का प्रयोग नहीं करतीं, बल्कि सामान्य जन की भाषा को काव्यात्मक गरिमा प्रदान करती हैं।

5.8 काव्य-सौन्दर्य

इस संग्रह का सौन्दर्य केवल भाषा में नहीं बल्कि उसकी विचारधारा में भी निहित है।

यहाँ सौन्दर्य—

- संवेदना में है।
- संघर्ष में है।
- आशा में है।
- मानवीय संबंधों में है।

यही इस काव्य कृति को समकालीन हिन्दी कविता में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

अध्याय–6

डॉ. किरण बिस्सा के काव्य कृति *'एक टुकड़ा आकाश'* का विश्लेषण

6.1 कृति का परिचय

"एक टुकड़ा आकाश" समकालीन हिन्दी कविता का अत्यंत महत्त्वपूर्ण काव्य कृति है। इसमें आधुनिक स्त्री की चेतना, आत्मसम्मान, स्वतंत्र अस्तित्व तथा मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

काव्य कृति का शीर्षक स्वयं अत्यंत अर्थपूर्ण है। "आकाश" स्वतंत्रता, अनंत संभावनाओं तथा आत्मविस्तार का प्रतीक है। "एक टुकड़ा" शब्द यह संकेत करता है कि समाज आज भी स्त्री को उसका सम्पूर्ण आकाश नहीं दे पाया है। वह अपने अधिकार, सम्मान और स्वतंत्र पहचान के लिए निरंतर संघर्षरत है।

6.2 स्त्री-अस्मिता

यह संग्रह स्त्री-अस्मिता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कवयित्री स्त्री को केवल दया की पात्र नहीं मानतीं, बल्कि उसे अपने निर्णय स्वयं लेने वाली स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

उनकी कविता का संदेश है—

स्त्री समानता नहीं माँगती, वह अपने अस्तित्व की स्वाभाविक स्वीकृति चाहती है।

6.3 सामाजिक यथार्थ

कविताओं में आधुनिक समाज की अनेक समस्याएँ दिखाई देती हैं—

- पारिवारिक विघटन
- अकेलापन
- उपभोक्तावाद
- नैतिक संकट
- बदलते मानवीय संबंध

कवयित्री इन समस्याओं का केवल चित्रण नहीं करतीं बल्कि संवेदनशील समाधान की ओर भी संकेत करती हैं।

6.4 मानवीय संबंध

इस संग्रह में माँ, बेटी, पिता, मित्र, परिवार तथा समाज के संबंधों का अत्यंत संवेदनशील चित्रण है।

कवयित्री मानती हैं कि जीवन का वास्तविक सौन्दर्य प्रेम, विश्वास तथा मानवीय रिश्तों में निहित है।

6.5 प्रकृति चेतना

डॉ. किरण बिस्सा की कविताओं में प्रकृति जीवन की सहयात्री है।

आकाश, पक्षी, नदी, बादल, वर्षा, फूल, मिट्टी तथा वृक्ष केवल प्राकृतिक वस्तुएँ नहीं बल्कि जीवन-दर्शन के प्रतीक हैं।

प्रकृति यहाँ आशा, स्वतंत्रता तथा पुनर्निर्माण की प्रेरणा देती है।

6.6 भाषा एवं शैली

कवयित्री की भाषा अत्यंत सहज, कोमल तथा भावप्रवण है।

उनकी शैली की विशेषताएँ—

- मुक्तछंद

- प्रतीकात्मकता
- लयात्मकता
- संक्षिप्त अभिव्यक्ति
- गहन अर्थवत्ता

छोटे-छोटे शब्दों में बड़े जीवन-सत्य प्रस्तुत करना उनकी सबसे बड़ी विशेषता है।

6.7 प्रतीक-विधान

मुख्य प्रतीक—

- आकाश
- उड़ान
- चिड़िया
- नदी
- दीप
- धूप
- बारिश
- क्षितिज

ये सभी प्रतीक स्त्री की स्वतंत्रता, संघर्ष और संभावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं।

6.8 काव्य-सौन्दर्य

इस संग्रह का सौन्दर्य उसकी संवेदनात्मक शक्ति में निहित है।

कवयित्री भावुकता के स्थान पर संवेदनशील यथार्थ प्रस्तुत करती हैं।

उनकी कविता पाठक को निराश नहीं करती बल्कि संघर्ष के बीच आशा का मार्ग दिखाती है।

6.9 साहित्यिक महत्त्व

"एक टुकड़ा आकाश" समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री-विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज माना जा सकता है।

यह संग्रह—

- सामाजिक समानता
- स्त्री सम्मान
- मानवीय मूल्यों
- लोकतांत्रिक चेतना
- संवेदनशील समाज

की स्थापना का समर्थन करता है।

इसी कारण यह हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित होने योग्य उत्कृष्ट कृति सिद्ध होती है।

अध्याय–7

'तीस टुकड़ा सूरज' एवं 'एक टुकड़ा आकाश' का तुलनात्मक अध्ययन

7.1 प्रस्तावना

तुलनात्मक अध्ययन साहित्यिक अनुसंधान की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति है, जिसके माध्यम से दो कृतियों की समानताओं एवं भिन्नताओं का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शान्ति सागर के *'तीस टुकड़ा सूरज'* तथा डॉ. किरण बिस्सा के *'एक टुकड़ा आकाश'* का विषय-वस्तु, शिल्प, भाषा, प्रतीक, बिम्ब, स्त्री-विमर्श, सामाजिक चेतना तथा मानवीय संवेदना के आधार पर तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

दोनों काव्य कृति समकालीन हिन्दी कविता की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। यद्यपि दोनों कवयित्रियों की अभिव्यक्ति शैली और अनुभव-संसार अलग-अलग हैं, फिर भी उनका मूल उद्देश्य मनुष्य, समाज और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा है।

7.2 विषय-वस्तु की दृष्टि से

शान्ति सागर के काव्य में सामाजिक यथार्थ, आर्थिक विषमता, श्रमिक जीवन, ग्रामीण परिवेश और मानवीय संघर्ष अधिक प्रमुख हैं। उनकी कविताएँ सामूहिक जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखती हैं।

इसके विपरीत डॉ. किरण बिस्सा के काव्य में स्त्री-अस्मिता, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, पारिवारिक संबंध और भावनात्मक संघर्ष अधिक मुखर हैं। वे व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक संदर्भ से जोड़ती हैं।

इस प्रकार एक ओर *'तीस टुकड़ा सूरज'* समाज के विखंडित यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करता है, वहीं *'एक टुकड़ा आकाश'* स्त्री के आत्मविस्तार और आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति है।

7.3 सामाजिक चेतना

दोनों कवयित्रियों की सामाजिक प्रतिबद्धता अत्यंत सशक्त है।

शान्ति सागर समाज में व्याप्त गरीबी, अन्याय, शोषण तथा वर्गीय असमानता की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। उनकी कविताएँ सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देती हैं।

डॉ. किरण बिस्सा सामाजिक चेतना को स्त्री के अधिकारों और मानवीय समानता से जोड़ती हैं। उनके लिए न्यायपूर्ण समाज वही है जहाँ स्त्री और पुरुष समान गरिमा के साथ जीवन जी सकें।

7.4 स्त्री-विमर्श

दोनों काव्य कृतियाँ में स्त्री-विमर्श प्रमुख है, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति का स्वर भिन्न है।

शान्ति सागर स्त्री को संघर्षशील सामाजिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी स्त्री परिवार, समाज और कार्यक्षेत्र में समान भागीदारी चाहती है।

डॉ. किरण बिस्सा की स्त्री आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और आत्म-अभिव्यक्ति की आकांक्षा रखती है। वह परम्परागत बंधनों को चुनौती देती है, परन्तु संबंधों की गरिमा को भी बनाए रखना चाहती है।

7.5 मानवीय संवेदना

दोनों कवयित्रियों की कविताओं का मूल स्वर मानवीय संवेदना है।

शान्ति सागर का संवेदनात्मक संसार सामाजिक पीड़ा और संघर्ष से निर्मित है।

डॉ. किरण बिस्सा का संवेदनात्मक संसार आत्मीय संबंधों, प्रेम, विश्वास और आशा पर आधारित है।

दोनों ही कवयित्रियाँ मनुष्य को केन्द्र में रखती हैं और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का आग्रह करती हैं।

7.6 भाषा एवं शिल्प

दोनों कवयित्रियों की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है।

शान्ति सागर की भाषा की विशेषताएँ

- यथार्थपरक

- तीक्ष्ण
- प्रतीकात्मक
- व्यंग्यात्मक प्रभाव
- सामाजिक संवाद की भाषा

डॉ. किरण बिस्सा की भाषा की विशेषताएँ

- भावप्रधान
- कोमल
- लयात्मक
- सांकेतिक
- आत्मीय

दोनों मुक्तछंद का सफल प्रयोग करती हैं।

7.7 प्रतीक एवं बिम्ब

शान्ति सागर के प्रमुख प्रतीक—

- सूरज
- अंधेरा
- धूप
- रास्ता
- मिट्टी
- श्रम

डॉ. किरण बिस्सा के प्रमुख प्रतीक—

- आकाश
- उड़ान
- चिड़िया

- नदी
- वर्षा
- क्षितिज

दोनों कवयित्रियाँ प्रतीकों के माध्यम से गहरे जीवन-सत्य व्यक्त करती हैं।

7.8 प्रकृति-बोध

दोनों संग्रहों में प्रकृति का विशेष स्थान है।

शान्ति सागर के यहाँ प्रकृति सामाजिक यथार्थ से जुड़ती है।

डॉ. किरण बिस्सा के यहाँ प्रकृति स्वतंत्रता, आशा और आत्मविस्तार का प्रतीक बन जाती है।

7.9 काव्य-दृष्टि

दोनों कवयित्रियों की काव्य-दृष्टि मानवीय है।

शान्ति सागर सामाजिक परिवर्तन को प्राथमिकता देती हैं।

डॉ. किरण बिस्सा मानवीय संबंधों और स्त्री-अस्मिता को केंद्र में रखती हैं।

दोनों का अंतिम लक्ष्य एक संवेदनशील और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना है।

7.10 तुलनात्मक निष्कर्ष

दोनों काव्य कृति समकालीन हिन्दी कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

इनमें—

- सामाजिक यथार्थ
- मानवीय संवेदना
- स्त्री चेतना
- प्रकृति-बोध
- प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति
- सरल भाषा
- आधुनिक दृष्टिकोण समान रूप से विद्यमान हैं।

इसी साहित्यिक उत्कृष्टता के कारण दोनों कृतियाँ हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित हुईं।

अध्याय–8

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित *'तीस टुकड़ा सूरज'* तथा *'एक टुकड़ा आकाश'* समकालीन हिन्दी कविता की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। दोनों कवयित्रियों ने अपने-अपने अनुभव संसार के माध्यम से आधुनिक समाज की जटिलताओं, मानवीय संघर्षों और सामाजिक मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है।

शान्ति सागर ने सामाजिक यथार्थ, वर्गीय विषमता तथा श्रमिक जीवन की पीड़ा को अपनी कविता का केन्द्र बनाया है। दूसरी ओर डॉ. किरण बिस्सा ने स्त्री-अस्मिता, आत्मसम्मान और स्वतंत्र पहचान को सशक्त स्वर प्रदान किया है।

दोनों काव्य कृतियाँ में मानवीय संवेदना, सामाजिक प्रतिबद्धता, सरल भाषा, सशक्त प्रतीक-विधान तथा आधुनिक जीवन-दृष्टि का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यही विशेषताएँ इन्हें श्रेष्ठ कृति पुरस्कार के योग्य बनाती हैं।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि हरियाणा साहित्य अकादमी केवल उत्कृष्ट साहित्य का सम्मान नहीं करती, बल्कि ऐसे साहित्य को प्रोत्साहित करती है जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन की चेतना उत्पन्न करे। दोनों काव्य कृति समकालीन हिन्दी साहित्य की मूल्यवान धरोहर हैं तथा भविष्य के शोधार्थियों के लिए अध्ययन का महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं।

शोध की प्रमुख उपलब्धियाँ

- हरियाणा साहित्य अकादमी के श्रेष्ठ कृति पुरस्कार के साहित्यिक महत्त्व का विश्लेषण।
- दोनों काव्य कृतियाँ का तुलनात्मक अध्ययन।
- समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री-विमर्श की भूमिका का विश्लेषण।
- सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना के नए आयामों की पहचान।
- भाषा, शिल्प, प्रतीक और बिम्बों का आलोचनात्मक अध्ययन।

- हरियाणा की साहित्यिक परंपरा में इन कृतियों के योगदान का मूल्यांकन।

संदर्भ सूची (प्रारूप)

1. शान्ति सागर. *तीस टुकड़ा सूरज.* (प्रकाशक एवं संस्करणानुसार विवरण जोड़ें)
2. डॉ. किरण बिस्सा. *एक टुकड़ा आकाश.* (प्रकाशक एवं संस्करणानुसार विवरण जोड़ें)
3. बच्चन सिंह. *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास.*
4. नामवर सिंह. *कविता के नये प्रतिमान.*
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी. *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास.*
6. नगेन्द्र. *भारतीय काव्यशास्त्र.*
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी. *साहित्य का मर्म.*
8. रामविलास शर्मा. *हिन्दी साहित्य और समाज.*
9. मैनेजर पाण्डेय. *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका.*
10. हरियाणा साहित्य अकादमी की वार्षिक प्रतिवेदन एवं प्रकाशित सामग्री।